



ग्रीष्मकालीन मूंग की वैज्ञानिक खेती

मोहम्मद हसनैन*, गुफरान अहमद**, धीर प्रताप***, राजीव कुमार सिंह**** और अंकुर त्रिपाठी*****

देश के उत्तर और पूर्व के सिंचित क्षेत्रों में ग्रीष्मकालीन मूंग की खेती का क्षेत्रफल बढ़ाने की अपार संभावनाएं हैं। उत्तर भारत के जिन क्षेत्रों में सिंचाई की पूर्ण सुविधा है, उन क्षेत्रों के किसानों को गेहूं, मटर, मसूर, लाही, चना इत्यादि फसलों के उपरांत कम अवधि वाली मूंग प्रजाति की खेती करनी चाहिए। इससे किसानों को कम लागत और थोड़े समय में अच्छा मुनाफा मिल सकता है तथा धान की फसल लगाने से पहले खाली पड़ी जमीन का सही उपयोग भी हो जाता है।

ग्रीष्मकालीन मूंग के लिये उपोष्ण कटिबंधीय जलवायु की आवश्यकता होती है, जो इसकी वृद्धि और पैदावार के लिये उपयुक्त होती है। मूंग के अच्छे अंकुरण व समुचित बढ़वार के लिये 20-40 डिग्री सेल्सियस तापमान उपयुक्त होता है। यह अधिक तापमान सहन करने वाली फसल है और इसे सफलतापूर्वक 40 डिग्री सेल्सियस तापमान पर उगाया जा सकता है।

मृदा

मूंग को किसी भी मृदा में उगाया जा सकता है, किन्तु बलुई दोमट मृदा को

इसकी फसल के लिये उपयुक्त माना जाता है। जल-भराव वाली मृदा में इसकी खेती नहीं करनी चाहिए। जलभराव से इसके पौधों



मूंग की फसल

*विषय वस्तु विशेषज्ञ, कृषि विज्ञान केंद्र, चित्तौड़ा, मुजफ्फरनगर, सरदार वल्लभ भाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मेरठ (उत्तर प्रदेश); **एम.एस.सी-कृषि; ***शोध छात्र, कृषि विभाग, इंटीग्रल विश्वविद्यालय, लखनऊ (उत्तर प्रदेश); ****प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली; *****शोध छात्र, आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या (उत्तर प्रदेश)

सारणी 1. ग्रीष्मकालीन मूंग का फसलचक्र

क्र.सं.	फसलचक्र
1	धान-गेहूं-मूंगबीन
2	सोयाबीन-गेहूं-मूंगबीन
3	मक्का-सरसों-मूंगबीन
4	मक्का-गेहूं-मूंगबीन
5	धान-मटर-मूंगबीन

के नष्ट होने का खतरा बढ़ जाता है। इसकी खेती में मृदा का पी-एच मान 6 से 7.5 के मध्य होना चाहिए।

मृदा की तैयारी

मूंग की अच्छी फसल के लिये भुरभुरी मृदा की आवश्यकता होती है। इसलिए इसकी फसल करने से पहले खेत को अच्छी तरह से तैयार कर लेना चाहिए। सबसे पहले खेत की गहरी जुताई कर देनी चाहिए। गर्मी/बसंत के लिये अंतिम फसलों की कटाई के बाद खेती और सिंचाई के बाद जुताई की जानी चाहिए। पहली जुताई मिट्टी पलट हल से एवं शेष जुताई रोटावेटर या कल्टीवेटर से करनी चाहिये। उसके बाद पाटा लगा देना चाहिये। फसल के उचित अंकुरण और स्थापना के लिये एक अच्छी तरह से तैयार बीज क्यारी की आवश्यकता होती है।

उन्नत किस्में

ग्रीष्मकालीन मूंग की किस्में-आई.पी.एम.-205, आई.पी.एम.-14, पंत मूंग-3, पंत मूंग-4, पूसा विशाल,पूसा रन्ता, पूसा-0672 एवं एम.एच.-421 आदि हैं।

बीजदर

छिड़काव विधि द्वारा 30-35 कि.ग्रा./हैक्टर तथा पंक्ति विधि द्वारा 20-25 कि.ग्रा./हैक्टर बीज की आवश्यकता होती है।



हाथ से निराई

सारणी 2. ग्रीष्मकालीन मूंग की किस्में

क्र. सं.	किस्में	उपज क्विंटल/हैक्टर)	विशेषताएं
1	आई.पी.एम.-205	12-16	मूंग की यह किस्म आईआईपीआर से विकसित की गई है। यह कम अवधि की किस्म है, जो 55-60 दिनों में पककर तैयार हो जाती है।
2	आई.पी.एम.-14	11-14	मूंग की यह किस्म पीला मोजैक रोग और खस्ता फफूंदी के लिये अत्यधिक प्रतिरोधी है।
3	पंत मूंग-3	10-15	मूंग की यह किस्म पन्त नगर कृषि विश्वविद्यालय से विकसित की गई है।
4	पूसा विशाल	10-12	मूंग की यह किस्म आईएआरआई द्वारा विकसित की गई है। किस्म पीला मोजैक रोग प्रतिरोधी है।
5	पूसा रन्ता	12-13	मूंग की यह किस्म आईएआरआई विकसित की गई है।

बीजोपचार

बीजों को पहले 9.50 ग्राम थीरम एवं 1 ग्राम कार्बेन्डाजिम या 4-5 ग्राम ट्राइकोडर्मा प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित करें।

उपज

मूंग, बुआई के 60 से 70 दिनों के पश्चात पैदावार देने के लिये तैयार हो जाती है। फली पकने के बाद काले रंग की दिखाई देने लगती है। उस दौरान इसके पौधों की कटाई कर लेनी चाहिए। पौधों की कटाई के बाद उन्हें एकत्रित कर धूप में अच्छे से सुखा लेना चाहिए। इसके बाद सूखी हुई फलियों को मशीन की सहायता से निकाल लिया जाता है। ग्रीष्मकालीन मूंग की फसल से 8-10 क्विंटल/हैक्टर की उपज प्राप्त की जा सकती है। मूंग का थोक बाजारी भाव 6 से 7 हजार/क्विंटल तक होता है। मूंग की फसल कम समय में तैयार हो जाती है, जिससे किसान भाई एक वर्ष में दो से तीन बार इसकी फसल को उगा सकते हैं। मूंग की एक बार की फसल से किसान भाई एक हैक्टर के खेत में 40 हजार तक की कमाई कर सकते हैं।



रासायनिक खरपतवार नियंत्रण

फसलचक्र

ग्रीष्मकाल में कम अवधि वाली प्रजातियों का उपयोग कर मूंग की खेती की जा सकती है, जिससे अधिक उपज एवं लाभ प्राप्त किया जा सकता है। धान-गेहूं, धान-सरसों, धान-मटर, धान-आलू, सोयाबीन-गेहूं, मक्का-गेहूं, मक्का-सरसों आदि फसलचक्र का उपयोग मार्च के अंतिम सप्ताह से जून के प्रथम सप्ताह तक किया जा सकता है।

फफूंदनाशी से बीजोपचार करने के उपरांत बीज को राइजोबियम एवं पी.एस.बी. कल्चर से भी उपचारित करें।

बुआई

किसान बीज को छिड़काव विधि द्वारा अथवा पंक्ति विधि द्वारा (पंक्ति से पंक्ति की दूरी 25-30 सें.मी., बीज की बीज से दूरी 8-10 सें.मी. तथा बीज की गहराई 3-5 सें.मी.) पर बो सकते हैं।

पोषण एवं प्रबंधन

ग्रीष्मकालीन मूंग में नाइट्रोजन की आवश्यकता कम होती है। यह फसल वायुमंडल से नाइट्रोजन की पूर्ति आवश्यकतानुसार कर लेती है। शेष पोषक तत्वों की पूर्ति पूर्व के फसल अवशेषों से हो जाती है। इसके अतिरिक्त 80-100 कि.ग्रा. डी.ए.पी. तथा 30 कि.ग्रा. एम.ओ.पी. एवं 150 कि.ग्रा. एन.पी. के. को खेत की अंतिम जुताई के समय मृदा में अच्छी तरह से मिला देना चाहिये।

जल प्रबंधन

ग्रीष्मकालीन मूंग की फसल में 3-4 बार सिंचाइयों की आवश्यकता होती है। पहली सिंचाई बुआई के 10-15 दिनों के उपरांत करनी चाहिये। दूसरी सिंचाई फूल आने के समय तथा तीसरी सिंचाई फल आने के उपरांत चाहिये। इसके अतिरिक्त यदि सिंचाई की आवश्यकता हो तभी सिंचाई करनी चाहिये। खेत में उचित जल निकास की व्यवस्था होनी चाहिये।

खरपतवार नियंत्रण

बुआई के 20-25 दिनों बाद यदि उचित



मूंग की खेती का रखरखाव

खरपतवार का प्रबंधन नहीं किया जाता है, तो उपज 30-35 प्रतिशत कम हो जाती है। बुआई के 20-25 दिनों बाद एक बार खेत में निराई अवश्य करनी चाहिये। इसके बाद पेन्डामेथिलीन खरपतवारनाशी को 1 कि.ग्रा./हैक्टर की दर से अथवा इमेजाथापियर 10 प्रतिशत को 1000 मि.ली./हैक्टर अथवा क्विजालॉफ ऐथाईल 5 प्रतिशत को 1000 मि.ली./हैक्टर की दर से छिड़काव करना चाहिये।

रोग/कीट प्रबंधन

सफेद मक्खी की रोकथाम के लिये इमिडाक्लोप्रिड की 150 मि.ली. मात्रा अथवा डाइनियोएंट की 400 मि.ली. मात्रा प्रति हैक्टर की दर से 10-12 के अंतराल पर दो बार छिड़काव करना चाहिये। फलीभेदक कीट तथा पत्तीमोड़क कीट के नियंत्रण के लिये कोराजन की 150 मि.ली. मात्रा या

स्पाइनोसैड की 125 ग्राम मात्रा प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करना चाहिये।

कटाई एवं मड़ाई

जब मूंग की 50 प्रतिशत फलियां पककर तैयार हो जाएं, तो उनकी पहली तुड़ाई कर लेनी चाहिये तथा दूसरी तुड़ाई/कटाई फलियों के पूर्णतः पकने पर करनी चाहिये।

सूचना

ग्राहकों से निवेदन है कि वे 'खेती पत्रिका' हेतु अपना चंदा समय से पूर्व भेजने की व्यवस्था करें, ताकि पत्रिका समय पर और लगातार मिलती रहे। यदि आपका पता बदल गया है तो उसकी तुरंत सूचना दें। इसके लिए अपनी ग्राहक संख्या का उल्लेख अवश्य करें।

व्यवसाय प्रभारी
कृषि ज्ञान प्रबंध निदेशालय
(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)
कृषि अनुसंधान भवन-1, पूसा,
नई दिल्ली-110012

सारणी 3. खरपतवारनाशी की मात्रा और प्रयोग का समय

क्र.सं.	खरपतवारनाशी	व्यावसायिक नाम	मात्रा/हैक्टर	छिड़काव का समय
1.	पेंडामेथलिन	स्टम्प 440	1.5-2 लीटर	पूर्व उद्भव
2.	इमेजाथापियर	स्पिनेकर	100-140 ग्राम	पूर्व उद्भव
3.	असिफ्लोरफें	ब्लेजर	1-2 लीटर	उद्भव के बाद
4.	कइजलोफोप-पी एथिल	टरगा	120-1000 मि.ली.	उद्भव के बाद